Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 6 | JUNE 2024

हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु युग और नवीन चेतना : एक विवेचना

डॉ. राजेन्द्र कुमार [1]

[1] **सहायक आचार्य, हिंदी (अतिथि VSY), राजकीय महाविद्यालय पीसांगन (अजमेर).**

ABSTRACT:

हिन्दी साहित्य में आधुनिक काल का प्रारम्भ भारतेन्दु युग से माना जाता है। भारतेन्दु युग हिन्दी में विविध गद्य विद्याओ के प्रर्वतन का काल है। भारतेन्द को हिन्दी में नवजागरण का अग्रदूत माना जाता है। अपने समय के स्चनाकारों के साथ मिलकर उन्होने हिन्दी साहित्य में एक नवीन युग का सूत्रपात किया। यह नवीन युग काल, प्रवृत्ति, चेतना, विधा हर दृष्टि से नया था। नवीन युग की नई चेतना और विधा के वाहक भारतेन्दु हरिशचन्द्र थे।

KEYWORDS:

आधुनिक चेतना, नवीन गद्य रूप, भारतेन्दुयुगीन लेखक।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
28th June 2024	30th June 2024

विषय प्रवेश:-

नई चेतना के कारण भारतेन्दु युगीन साहित्य हिन्दी की रीतिकालीन चेतना से मुक्त हुआ। यह नई चेतना आधुनिकता से सम्पृक्त थी। आधुनिक चेतना के निर्माण और विकास में युगीन परिस्थितियों का योगदान है। भारत में बढ़ते अग्रेजी वर्चस्व ने साहित्य पर भी प्रभाव डाला। भारतेन्दु और उनके मण्डल के लेखकों पर युगीन स्थितियों का स्पष्ट प्रभाव है। भारतेन्दु युगीन लेखकों को रीतिकालीन अतिशय श्रृंगारिक चित्रण, नायिका भेद नख शिख, चमत्कार - प्रदर्शन आकृष्ट नही करते हैं। इस युग के लेखक देश की दुर्दशा पर चिन्तित होते है। इनके साहित्य में देशानुराग कूट- कुट कर भरा है। एक नए तरह की राष्ट्रीय चेतना के प्रथम स्वर हमें भारतेन्दुयुगीन साहित्य में परिलक्षित होते हैं। भारतेन्दु युगीन साहित्य में चेतना के दो रुप स्पष्ट तौर पर मिलते हैं - राष्ट्रीय और सामाजिक। राष्ट्रीय चेतना का स्वर अंग्रेजी राज और खास तौर पर उसके द्वारा किये जा रहे आर्थिक शोषण का विरोध करता है। सामाजिक चेतना का स्वर भारतीय समाज में फैली तमाम बुराईयों और रुढ़ियों का विरोध करता है। बाल विवाह, पर्दा, प्रथा, नारी अशिक्षा, धार्मिक पाखण्ड जैसी सामाजिक कुरीतियों का खण्डन भारतेन्दु युगीन साहित्य का प्रधान लक्ष्य है।

डॉ. रामविलास शर्मा ने भारतेन्द्र युगीन साहित्य को 'गदर 'से प्रभावित मानते हुऐ उसके जनवादी स्वरूप को स्पष्ट किया है। उनके शब्दो में भारतेन्दु युग का साहित्य "भारतीय समाज के पुराने ढाँचे से सतुष्ट न रहकर उसमें सुधार भी चाहता है। वह केवल राजनीतिक स्वाधीनता का साहित्य न होकर मनुष्य की एकता समानता और भाईचारे का भी साहित्य है। भारतेन्दु स्वदेशी आन्दोलन के ही अग्रदूत न थे, वे समाज सुधारकों में भी प्रमुख थे।"

भारतेन्दु युग में पथ पर गद्य की प्रधानता का बडा कारण गद्य में नवीन विधाओं का प्रार्दुभाव भी है। भारतेन्दु युग में नाटक के पुनर्प्रचलन और कथारूपों के नवागत प्रयोगों के साथ निबंध, आलोचना पत्र-पत्रिकाओं में सम्पादकीय जैसे नवीन गद्य रूपों का विकास हुआ।

भारतेन्द्र ने भक्तिपरक और रीति परक दोनों तरह की कविताए की है, लेकिन उनकी कविताओं में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना का स्वर प्रधान है। भारतेन्द्र युग में जीवन, समाज और देश की समस्याएं कविता बनी। भारतेन्दु और उनके समकालीन कवियों ने तत्कालीन ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा भारत के आर्थिक दोहन और शोषण को उजागर किया। भारतेन्दु द्वारा रचित प्रसिद्ध पक्तियां उल्लेखनीय है -

अंगरेज राज सुख-साज सजे सब भारी।

पै धन विदेस चलि जात इहै मति खारी।

भारतेन्दु ने युगीन चेतना के अनुरूप देश की दुर्दशा का चित्रण कर राष्ट्रीय चेतना पैदा करने का स्तुत्य प्रयास किया। भारत की जातीय चेतना के रूप में उन्होंने भाषा समस्या पर विचार करते हुए लिखा है-

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।

बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल।

भारतेन्दु मण्डल के कवि प्रतापनारायण मिश्र ने भारत के आर्थिक शोषण को उजागर करते हुऐ अग्रेजों की पोल खोली। उनकी कविताओं में क्षोभ का स्वर मार्मिक है-

जग जाने इंगलिश हमे, वाणी वस्त्रहि जोय।

मिटे वदन कर श्याम रंग, जन्म सुफल तब होय।

भारतेन्द्र ने अपने युग के हिन्दी साहित्य को नवजागरण की चेतना के साथ वृहत्तर सामाजिक समस्याओं से जोड़ा। नाटक लोकजागरण का सशक्त माध्यम है। भारतेन्दु युगीन रचनाकारों ने युगीन चेतना के प्रकटीकरण के लिए नाटक विधा का बखुबी इस्तेमाल किया। विधाओ के विकास के रूप में नाटकों का पुनर्प्रचलन भारतेन्दु युग की अत्यंत महत्वपूर्ण विशेषता है। उनके मौलिक नाटकों में एक तरफ अतीत का गौरवगान है तो दूसरी तरफ समसामयिक समस्याओं का चित्रण भी। भारतेन्द्र के प्रसिद्ध नाटक 'भारत-दुर्दशा' में देश की तत्कालीन दशा को लेकर गम्भीर चिन्ता झलकती है। अन्धेर नगरी भारतेन्द्र का सर्वाधिक चर्चित नाटक है। इसमें तत्कालीन शासन व्यवस्था पर तीखा व्यंग किया गया है। लोककथा और लोकरूपों का बेहतरीन प्रयोग करके इसमे सत्ता की विवेकहीनता को उजागर किया गया है।

भारतेन्दु युग में भारतेन्द्र के अतिरिक्त लाला श्रीनिवास दास, प्रतापनारायण मिश्र, राधा चरण गोस्वामी जैसे रचनाकार भी नाटको के माध्यम से युगीन चेतना का प्रसार कर रहे थे। राधा चरण गोस्वामी के दो प्रहसन तनमन गोंसाईजी को अर्पण तथा बूढे मुँह मुहासे उल्लेखनीय है। पहले प्रहसन में धर्मगुरुओ की छदम लीलाओं को उजागर किया गया है। बूढे मुँह मुहासे में परनारीगमन के दुष्परिणामों का रेखांकित किया गया है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने सन् 1868 में कवि वचन सुधा नामक पत्रिका प्रारंभ की। इसमें साहित्यिक रचनाओं के साथ सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विषयों पर विचार और टिप्पणी होती थी। इस पत्रिका में उन्होने विलायती कपडे के बहिष्कार की अपील की थी और ग्राम गीतों के संकलन की योजना प्रकाशित की थी।

बद्रीनारायण चौधरी ने नागरी नीरद नामक पत्र, प्रेमधन, आनन्द, कादम्बिनी नामक पत्रिकाओं के माध्यम से अंग्रेजी नीति का भण्डाफोड़ किया और कर से पीड़ित किसानों के क्लेश का वर्णन किया।

भारतेन्दु ने अनेक प्रकार के निबंध- ऐतिहासिक, धार्मिक, साहित्यिक आख्यानात्मक, भाषापरक, यात्रात्मक, विचारात्मक आदि लिखे। उपनिवेशवाद विरोधी विचारधारा उनके निबंधो में दिखाई देती है। धर्म के के सबंध में उनकी धारणा मूलत: प्रगतिशील थी। वे सभी धर्मों और संस्कृतियों के मेलजोल से राष्ट्रीय जागरण और एकता पैदा करना चाहते थे। स्वदेशी पर उन्होंने बल दिया है।

भारतेन्दु युग के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार बाबू देवकी नन्दन खत्री है। उनका उपन्यास चन्द्रकान्ता इतना लोकप्रिय हुआ कि तिलस्मी उपन्यासों की धूम मच गयी। उनका दूसरा उपन्यास चन्द्रकांता सन्तति भी बहुत लोकप्रिय हुआ। कहते है कि उन्हें पढ़ने के लिए बहुत से लोगों ने हिन्दी सीखी।

निष्कर्ष:-

भारतेन्द्र युग हिन्दी साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ है। इस काल में हिन्दी साहित्य नवीन युग की आधुनिक चेतना के साथ नवजागरण की भावना से अनुप्राणित है। हिन्दी साहित्य रसिक दरबार की कारा से मुक्त होकर जनता तक पहुंचता है। लोकभाषा के रूप में प्रचलित खड़ीबोली हिन्दी साहित्य की वाहक बनती है। भारतेन्दु युगीन नवजागरण की चेतना एक तरफ सामन्ती मूल्यों से संघर्ष करती थी ती दूसरी तरफ साम्राज्य वादी ताकतों से। भारतेन्दु युगीन रचनाकारों का साहित्य के माध्यम से जनता के लिए किया जाने वाला संघर्ष अप्रतिम है।

REFERENCES

1. डॉ. सत्यपाल शर्मा: हिन्दी साहित्य का इतिहास

2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल: हिन्दी साहित्य का इतिहास

3. शंभूनाथ (संपादित): भारतेन्दु और भारतीय नव जागरण

4. डॉ. नगेन्द्र (संपादित): हिंदी साहित्य का इतिहास

5. प्रशांत दीक्षित : रचना संसार: भारतेंदु एवं द्विवेदी युग की प्रमुख पुस्तके